<u>29 अप्रैल 2023 को तेजपुर में आयोजित गौ कुम्भ के अवसर पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया जी का अभिभाषण</u>

परम आदरणीय सद्गुरु स्वतंत्रदेव जी महाराज,
संत प्रवर विज्ञानदेव जी महाराज,
गौकुंभ आयोजन समिति के कार्यकारी अध्यक्ष श्री सुशील गोलछा जी,
मंत्री निलेश अग्रवाल जी,
पूर्वांचल विहंगम योग संस्थान के अध्यक्ष श्री मदन मोहन सिंह जी,
उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री कैलाश लोहिया जी एवं श्री रतन शर्मा जी,
विहंगम योगा इंस्टीट्यूट ऑफ काउ मैनेजमेंट के अध्यक्ष श्री चंद्र प्रकाश शर्मा जी,
उपस्थित मातृशक्ति, युवा शक्ति
एवं विहंगम योग के अनुयायिओं,

जानकी नवमी के पावन अवसर पर मैं आप सबको हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं। जैसा कि हम सब जानते हैं कि जगद् जननी मां सीता राजा विदेह जनक की पुत्री होने के कारण विदेही के रूप में विख्यात हैं। देह की नश्वरता और आत्मा तथा परमात्मा की शाश्वतता को जानना और प्राप्त करना ही सनातन धर्म है। और मुझे विहंगम योग के ज्ञान के बारे में बताया गया है कि अमर हिमालय योगी सद्गुरु सदाफलदेव जी महाराज ने आत्मिक धरातल पर साधन के जरिए अमर परमात्मा के उस अमर ज्ञान को 17 वर्षों की कठिन साधना के बाद, फिर से प्राप्त कर जिज्ञासुओं के लिए सहज सुलभ कर दिया, जो सनातन धर्म की मूल थाती है।

मुझे यह जानकारी मिली है कि करीब 100 वर्ष पूर्व सद्गुरु सदाफलदेव जी महाराज ने इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार का कार्य शुरू किया था। आज इस विहंगम ज्ञान का प्रचार-प्रसार वर्तमान परंपरा सद्गुरु स्वतंत्रदेव जी महाराज और स्वर्वेद के प्रचारक संत प्रवर विज्ञानदेव जी महाराज द्वारा देश-विदेश में किया जा रहा है। बलिया, प्रयागराज, गया, मधुमती, दंडकवन और वाराणसी सहित देश-विदेश में फैले विहंगम योग के सैकड़ों आश्रमों के द्वारा न सिर्फ भारत के अमर ज्ञान का प्रचार प्रसार किया जा रहा है, बल्कि गौ सेवा और जन सेवा के भी कई प्रकल्प चलाए जा रहे हैं।

यह जानकर और खुशी हुई कि वाराणसी के उमराहा में बन रहा विशाल स्वर्वेद मंदिर भारत की अद्भुत आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर बनेगा। पांच मंजिला यह आध्यात्मिक स्थली न सिर्फ कला और कौशल का एक बेजोड़ नमूना है, बल्कि वेद, पुराण, उपनिषद, गीता, रामायण व स्वर्वेद के दोहों और संदेशों से भारत की अमर आध्यात्मिक धरोहर को भी चिरजीवी बनाता है। इसमें एकसाथ 20 हजार लोग बैठकर साधन कर सकेंगे।

मेरी जानकारी में आया है कि विहंगम योग संस्थान के 98 वें वार्षिक उत्सव के मौके पर स्वयं भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने इस स्वर्वेद महामंदिर का भ्रमण इसकी कलात्मकता और आध्यात्मिकता की प्रशंसा करते हुए इसे भारत ही नहीं, बल्कि विश्व की धरोहर बताया था। विहंगम योग की ओर से मुझे बताया गया है कि 2024 में स्वर्वेद महामंदिर का उद्घाटन स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के कर कमलों से

होना तय हुआ है। मुझे बहुत ही प्रसन्नता है कि भारत के सनातन धर्म को विश्व विजयी बनाने के अभियान में लगे विहंगम योग संस्थान द्वारा गौ संरक्षण-संवर्द्धन के जरिए गौ आधारित अर्थ व्यवस्था के पुनरोत्थान के लिए किए जा रहे प्रयासों के तहत निर्मित गौशाला और अन्य प्रकल्पों के उद्घाटन और शिलान्यास कार्यक्रम में शामिल होने व सद्गुरुदेव जी के दर्शन करने का सौभाग्य मिला।

गौ, गंगा, गायत्री और गीता भारत के धर्म और सामाजिक - सांस्कृतिक जीवन का आधार रही है। गौ और प्रकृति एक दूसरे के पूरक हैं। गौवंश के नाश से प्रकृति के सामने ग्लोबल वार्मिंग से लेकर पर्यावरण के जहरीले होने जैसी कई समस्याएं पैदा हो गयी हैं। भारतीय देशी गौवंश को तो मनुष्य और पर्यावरण के लिए अमृत तुल्य माना गया है। पोषण से लेकर औषधीय गुणों के चलते ही गाय को माता कहकर सम्मान दिया गया है। गौवंश आधारित उत्पादों के निर्माण और उपयोग के जरिए न सिर्फ अर्थ व्यवस्था को मजबूती मिलेगी, बल्कि पर्यावरण भी शुद्ध होगा।

गौकुंभ के जरिए विहंगम योग संस्थान ने इस दिशा में जो पहल शुरू की है, वह प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। मैं इस प्रकल्प का लोकार्पण करते हुए इससे जुड़े सभी दानदाताओं और प्रबंधन समिति के सदस्यों को बधाई एवं साधुवाद देता हूं।

आशा करता हूं कि राज्य के अन्य जिलों, शहरों और गांवों में इस प्रकार के छोटे-बड़े प्रकल्पों के जरिए भारतीय गौवंश के संरक्षण - संवर्द्धन और

गौ आधारित अर्थ व्यवस्था को मजबूत करते हुए देश को आगे ले जाने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के संकल्प में आप सभी सहयोगी बनेंगे।

भारत फिर से विश्वगुरु बने, इसी संकल्प के साथ, फिर से गौकुंभ की सबको बधाई देता हूं।

जय हिंद।